उपसंहार

उपसंहार

आधुनिक युग में हिन्दी साहित्य की गद्य विधा में कहानी साहित्य का विकास अधिक मात्रा में हुआ है। इसमें कई प्रतिभावान कहानीकारों ने अपना योगदान दिया है। पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं ने भी हिन्दी कहानी साहित्य को आगे बढ़ाने का प्रयास किया। अपराजेय जिजीविषा की धनी, तिल-तिल जलकर कमज़ोरों को उजाला देकर ताकत देनेवाली अति संवेदनशील वरिष्ठ कथाकार नासिरा शर्मा हिन्दी की श्रेष्ठतम महिला लेखिका है। नासिराजी ने अपने जीवन में आए हुए समस्त अनुभवों को ज्यों का त्यों अपनी कलम में बाँध लेने का सफल प्रयास किया। नासिराजी आम आदमी की व्यथा, दुःख और दैनिक जीवन में उसके संघर्ष को पात्रों के माध्यम से अपनी कहानियों में उतरती है। इनके कैंवास पर हज़ारों रंगों की इन्द्रधनुष बिखरती है, और मिटती है।

नासिराजी जो देखती है, महसूस करती है, वहीं लिखती भी है। पूर्वग्रह से ग्रसित लेखिका नहीं है। किसी वर्ग विशेष, जाति, समुदाय या धर्म की आड भी नहीं लेती है। उन्होंने साधू की तरह इन सबसे ऊपर उठकर रचना का संसार रचती है। इनका कलम कभी दो धारी तलवार बन जाता है तो कभी मुलायम ब्रश / नासिराजी देश-विदेश के जन मानस से विचारपूर्ण साक्षात्कार किया है। उसकी पीडा और दुःख दर्द को केवल देखा और महसूस ही नहीं किया, बल्कि उस पर उन्होंने कलम चलायी। मानव द्वारा मानव को दी गयी पीडा की बर्बरता के खिलाफ आवाज़ उठाती है। यह आवाज़ किसी वर्ग विशेष के लिए नहीं है। जहाँ अवसाद है, उत्पीडन है, प्रताडना है, वहाँ आप नासिरा शर्मा को खड़ी पायेंगे। नासिरा शर्मा भारतीय महिला रचनाकारों में पहली कहानीकार है

जिन्होंने भारत के साथ-साथ ईरान-इराक की नारियों का रोमांचकारी दस्तावेज को कलाकृति के रूप में रचा है।

इंसान और इंसानियत ईश्वरीय वरदान है, और नासिराजी की लेखिनी इंसानियत की स्याही से ही भावों में रंग लाती है। उनकी कालजयी कहानियों की प्रामाणिकता पूर्णतः विश्वसनीय है, क्योंकि उनकी सोच न तो हवा में अपने टीले बनाती है और न ही वह उसे बनावटी व छद्म लबादा ओढ़ती है। उनकी कहानियों में मानवीय यथार्थ का जो दर्द है, जो टीस है, वह उन्हें अपने समकालीनों से अलग तथा विशिष्ट बना देती है। नासिराजी अपनी कहानियों में स्त्री की भावनाओं और संवेदनाओं का इतना मार्मिक चित्रण किया है कि पाठक उनकी कहानियों में स्वयं की झलक देखता है। नारी की भावनाओं की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति से नासिरा ने मुस्लिम समाज में उत्पन्न नारी के अस्तित्व को अस्मिता प्रदान की। नासिराजी ईरानी, अफगानी, हिन्दुस्तानि, इराक, पाकिस्तान और कई देशों की नारियों को हमारे समक्ष लाकर हमें विचार करने के लिए मजबूर किया है कि इन स्त्रियों की स्थिति ही हमारे देश की स्त्रियों से कुछ ज्यादा अलग नहीं। नासिराजी ने अपनी कहानियों में केवल नारी प्रश्न ही नहीं उठाया बल्कि उन्होंने समाज से सरोकार रखनेवाले सभी प्रश्न को उपस्थित किया है। उनकी कलम मानवी संस्कृति की हिमायती है। वह मनुष्य को सरहदों के दायरे में नहीं बाँधती बल्कि 'वसुदैव कुटुंबकम्' के दृष्टि से देखती है। मानवीय सरोकार किसी एक देश के नहीं हो सकते, वह तो समूचे विश्व के होते हैं और वही लेखिका अपने लेखन के द्वारा दर्शानी है।

समकालीनता अपने काल की समस्याओं और चुनौतियों का मुकाबला करती है। समस्याओं और चुनौतियों में भी केन्द्रिय महत्व रखनेवाली समस्याओं की समझ से समकालीनता उत्पन्न होती है। समकालीनता पूरे युग का स्थिति-विशेष यथार्थ को ग्रहण करता है। परिवेश की परिवर्तनशीलता के कारण समकालीनता का स्वरूप, देशकाल की

विविधता आदि में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन हो सकते है। स्थिति विशेष के प्रति जागरूकता समकालीनता की विशेषता है।

आठवें दशक में कहानिकारों ने जीवन के विविध अंतरंग और तनावपूर्ण छवियों के चित्र यथार्थ रूप में अंकित किया। इस समय कहानियों का ढाँचा पश्चिमी तथा अनुकृति नहीं रही। कहानी का एक भारतीय स्वरूप उभरकर आया। कहानीकारों ने आम आदमी के जीवन के छोटे-छोटे संदर्भ और वैयक्तिक पहलू से उसकी छोटी सच्चाइयों से जोडा है, जो सामान्यतः अभावों और आकुलताओं से भरा है। जीवन और मानव की सच्चाई की स्वीकृति और उसके बीच व्यक्ति की अस्मिता की खोज कहानी का मुख्य विषय बन गया।

इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक में कहानी साहित्य में न केवल समाज का प्रतिबिंब है, बल्कि मानव समाज के भविष्य का कल्पना चित्र अपनी गहरी वास्तविकता के साथ चित्रित हुआ। समाज की सारी अच्छाई और बुराई के साथ चलनेवाले कहानी साहित्य में ग्रामीण, दलित, आदिवासी, भूमंडलीकरण, पारिस्थितिक, सांप्रदायिकता, तथा नारी लेखन की चर्चा दिखाई देती है। पारिवारिक विघटन की समस्या को समकालीन कहानिकारों ने अपेक्षित स्थान देकर प्रस्तुत किया है। पारिवारिक टूटन के कारण बच्चों को जीवन में कैसी-कैसी यन्त्रणाओं से गुजरना पडता है, उसका संवेदनात्मक चित्रण समकालीन युग में कई कहानिकारों ने किया है। समकालीन कहानी युग जीवन की प्रायः समस्त समस्याओं को अपने में समेटकर चलता है। साहित्य का लक्ष्य मानव है और समसामयिक कहानी इस लक्ष्य को सजगतापूर्वक निभा रही है। समय के गंभीर सामाजिक यथार्थ और मानव की आन्तरिक सच्चाई को अनुभूत कराने का सृजनात्मक दायित्व भी समकालीन कहानी दिखा रही है। देश की सामाजिक व्यवस्था व्यक्ति की सत्ता, उसके

व्यक्तित्व की पहचान और सर्वोपरी सांस्कृतिक परंपराओं को दर्शन कराकर समकालीन कहानीकारों ने अपनी रचना धर्मिता को भी प्रमाणित किया।

वर्तमान दौर की स्त्री समान अधिकार, समान अस्तित्व और समान अस्मिता की न केवल हकदार है, बल्कि शिक्षा रोजगार, प्रगति की कामना लिए हुए वैयक्तिक विकास की अवधारणा व्यक्त करती है। स्त्री कहानीकार पुरुषों के मुकाबले और पुरुषों की उपस्थिति के बावजूद साहित्य में अपनी अस्मिता सिद्ध करती रही। उनके संवेदन की गहनता, उनके अनुभव का सार्थक संसार उनकी मार्मिक जीवन दृष्टि, उनकी अभिव्यक्ति की विशिष्टता और उनके 'बोल्डनेस ने पुरुष लेखन के आगे चुनौती खडा कर दी। परिमाणतः स्त्री कहानीकार की उपस्थिति आज के साहित्य में दिशा परिवर्तन की भूमिका निभा रही है।

आज के समकालीन युग में हिन्दी में लिखनेवाली महिलाओं की संख्या बढी है, और सांस्कृतिक परिदृश्य में वे दिखाई भी पडती है। इनकी कहानियों ने यथास्थितिवाद को तोडने का दुस्साहस किया है। इनकी कहानियों को पढ़कर यह कहा जा सकता है कि ये कहानियाँ कलात्मक सौंदर्य के कारण नहीं बल्कि सामाजिक संदर्भ के कारण महत्वपूर्ण हो जाती है। समकालीन महिला कहानिकार यह दिखाना चाहती है कि युग के साथ-साथ स्त्री अपने को स्वतंत्र रखना चाहती है। अपनी जिन्दगी के बारे में स्वतंत्र निर्णय लेने में अब नारी समर्थ हो गयी है। स्त्री का समाज के केन्द्र में आना और किसी हद तक विचार के केन्द्र में आना हमारे आर्थिक, सामाजिक विकास का परिणाम है। जनसंचार, पत्रकारिता, शिक्षा, तकनीकी क्षेत्र, व्यापार के क्षेत्र में पढ़ी लिखी महिलाओं ने एक महत्वपूर्ण उपस्तित दर्ज की है।

समकालीन कहानी साहित्य में नासिरा शर्मा एक विवादास्पद लेकिन महत्वपूर्ण रचनाकार है, जिन्होंने हिन्दी कहानी साहित्य में अपनी रचनात्मक कृतियों से विशिष्ट

पहचान दर्ज की है। उनका जन्म एक संपन्न परिवार में हुआ। उनका व्यक्तित्व गरिमामय एवं प्रभावपूर्ण है। सादगी और गांभीर्य उनके व्यक्तित्व की खास विशेषता रही है। व्यक्तित्व निर्माण में उनकी माँ का योगदान महत्वपूर्ण है। साहित्य उन्हें विरासत के रूप में मिला। हिन्दी उनकी मातृभाषा न होने पर भी उन्होंने साहित्य सृजन के लिए हिन्दी को ही पसंद किया है। उनके साहित्यिक योगदान का सम्मान करते हुए उन्हें अनेक सम्मानों से अलंकृत किया गया है।

नासिराजी ने साहित्यिक यात्रा में कहानी, उपन्यास, अनुवाद, समीक्षा वैचारिक लेख आदि में सफल लेखन किया है। वे एक कुशल संपादक के साथ ही निर्भीकता, संवेदनशीलता आदि गुण उनके पात्रों में दृष्टिगोचर है। अपने साहित्य द्वारा इन्सान को इन्सान बने रहने के लिए प्रेरित किया है। लोगों को, अपमान, शोषण एवं अत्याचार के खिलाफ खडा करना ही उनके लेखन का उद्देश्य रहा है।

एक नारी होने के नाते उनकी रचनाओं में प्रमुख रूप से नारी जीवन एवं उसकी समस्याओं का चित्रण हुआ है। नासिराजी की बहुतांश कहानियाँ मुस्लिम परिवेश से ताल्लुक रखती है। उन्होंने नारी मन के अनेक पहलुओं को उजागर करने का प्रयास किया तथा नारी को समाज के प्रति बोध कराने के लिए ही लिखा था। नासिराजी एक सुशिक्षित, विवाहिता नारी होने से उन्होंने समाज में स्थित विविध नारियों की विविध समस्याओं का सूक्ष्मता से अपनी कहानियों में चित्रण करके समाज के प्रति अपना दायित्व निभाया है। उनकी कहानियाँ युगों से पिछडी शोषित नारी का वक्तव्य है। उन्होंने मुस्लिम समाज के खोखले कानून, रीति-रिवाज़, मजहब और पर्दे में कैद नारी की यथार्थ एवं सूक्ष्म चित्रण किया है।

नासिराजी ने अपनी साहित्यिक कृतियों द्वारा अपने पात्रों को एक ऐसा पहचान दी की, हर कोई अपने मन की झलक को इन पात्रों में पाता है। यह पात्र रोज़मरी

की जिन्दगी से उठाए पात्र है, जो अपने जीवन का यथार्थ प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने अपने साहित्य द्वारा इंसान को इंसान बने रहने के लिए प्रेरित किया है। लोगों को अपमान शोषण एवं अत्याचार के खिलाफ खडा करना ही उनके लेखन का उद्देश्य रहा। उन्होंने देश विदेश के जन मानस से विचारपूर्ण साक्षात्कार किया है तथा उसकी पीडा और दुःख दर्द को देखा और महसूस ही नहीं किया बल्कि उस पर उन्होंने कलम भी चलायी है। उनकी कहानियों की पृष्ठभूमि में स्त्री की न केवल छाया रही बल्कि उन्होंने मुस्लिम समाज ही नहीं पूरे वैश्विक स्तर की नारियों को प्रस्तुत किया है। उन्होंने ईरानी, इराक, हिन्दुस्तानी, पाकिस्तान अनेक कई देशों की नारियों को हमारे समक्ष लाकर हमें विचार करने के लिए मजबूर किया है। नासिराजी अपनी लेखन द्वारा यही दिखाती है कि मानवीय सरोकार किसी एक देश के नहीं हो सकते वह तो समूचे विश्व के होते हैं।

लेखक को विशिष्ट बनाती है उनकी दृष्टि जीवन को देखने का उनका अपना नज़रिया। यह दृष्टि जब इंसान और उसकी इंसानियत को किसी भी जाति, धर्म, मजहब, संप्रदाय, देश प्रांत, सरहद तथा विचारधारा से ऊपर मानकर 'विश्वमानवतावाद' की पैरवी करते हुए भाईचारे का पैगाम देती है तो रचनाकार को महान बना देती है। नासिराजी के पास यही दृष्टि है तथा वह मानवतावादी दृष्टिकोण रखनेवाली लेखिका है। उन्होंने केवल भारत की ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व की समस्याओं को लेकर अपनी लेखनी चलायी है। मानवतावादी विचारधारा सारे मनुष्य के कल्याण के लिए है। मानवता नासिराजी की कहानियों का केन्द्रबिंदु है। विश्व भर में आज मानवता का क्रन्दन हो रहा है। नासिराजी अपनी कहानियों में इनसानी जिजीविषा की खोज की है। वे अपनी कहानियों में मनुष्य की बुनियादी आवश्यकता तथा जन्मसिद्ध अधिकार के लिए आवाज उठाती है।

नासिराजी के कहानियों में मानवता के जरूरतों के उल्लंघन का मूर्तरूप प्रस्तुत हुआ है। आज मानवीयता नष्ट होकर तरह तरह के कुचक्र रचे जा रहे है। मानव सब कही अपने अधिकारों से वंचित है। उन्होंने पूरी दुनिया भर घूमने से जो अनुभव उन्हें मिला, उसी के आधार पर कई कहानियों का सृजन किया है। आप पूरा-पूरा मानव जाति का शुभ चिन्ता रखनेवाले हैं। प्रान्त, भाषा, धर्म और सीमाओं के बन्धन आपकी खुली दृष्टि और विशाल मन को नहीं रोक सकते। उन्होंने नारी की कुण्ठा पीडा और अनुभूतियों के अतिरिक्त देश-विदेश में युद्धों और बँटवारों से पीड़ित निर्दोष लोगों की करुणा को मर्मस्पर्शी ढंग से चित्रित किया है। नासिराजी की कहानियाँ धर्म के मानवीय पक्ष की पहचान करती है। धर्म इंसान की असली समस्या नहीं। उसकी असली समस्या दुनिया के अन्य इंसानों के साथ उसके रिश्ते है। उन्होंने जो लेखन किया है वह किसी विशिष्ट हेतु से न कर मानव मात्र के लिए किया है। एक ओर उनके साहित्य में ठेठ भारतीय पात्र अपने परिवेश की अभिव्यक्ति करते हैं तो दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ज्वलंत मानवीय समस्याओं से रु-ब-रु नज़र आते हैं।

समकालीन कथा साहित्य की दुनिया में नासिराशर्मा की सबसे बडी विशेषता उनकी भाषा-शैली है। उन्होंने हिन्दु व मुस्लिम समुदायों के परिवारों में बोली जाने वाली बोलियों और शब्दों का बडा ही प्रवाहरूप प्रयोग किया है। नासिराजी की अपनी एक अलग स्वाभाविक और सहज हिन्दी है। उनकी कहानियों में उर्दु, फारसी और अरबी शब्दों का प्रयोग मिलता है। उन्होंने लोकोक्तियों, मुहावरों और कहावतों के साथ-साथ प्रतीक और बिंबों की बहुलता से प्रयोग किया है। शैली पर भी उनका विशेष अधिकार रहा है। कहानियों में व्यंग्यात्मक, आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक, चित्रात्मक और पत्रात्मक शैलियों के साथ प्रतीकात्मक शैलियों का भी प्रयोग कुशलता के साथ किया है।

अतः यह स्पष्ट होता है कि नासिरा शर्मा समय के साथ चलनेवाली लेखिका है। सांस्कृतिक समस्याओं में उन्होंने नष्ट हो रहे भारतीय मूल्य तथा उनकी पुर्नस्थापना पर बल दिया है। मुस्लिम समाज में पली बढी नासिरा शर्मा तरक्की पसंद लेखकों की जमात में आगे है। समाज को बदलने का सपना ही देखती हैं। वे उन सपनों को रचनाओं के माध्यम से साकार करने के लिए प्रयत्नशील हैं। सकारात्मक दृष्टिकोण, काम के प्रतिनिष्ठा और ईमानदारी आदि से उन्होंने अपनी साहित्य साधना में सफलता पाई है। इसी कारण नासिराजी समग्रताबोध वाली रचनाकार है। वह नारियों के दुःखों की संवाहिका होने के बावजूद नारीवादी नहीं है। वे स्त्री को पुरुष के खिलाफ खडी करने का विरोध नहीं करती है और स्त्री को स्वयं के खिलाफ खडी होने में ही उसका हित मानती है। आज जिस तरह नारी को संसद में आरक्षण दिया जा रहा है, उसका विरोध करते हुए वे स्त्री को स्वयं के बलबूतों पर वह अधिकार हासिल करने का समर्थन करती है।

संक्षेप में यह कह जा सकता है कि नासिरा शर्मा की कहानियाँ सांझा संस्कृति और हिन्दु मुस्लिम सौहार्द का हिमायती है सांप्रदायिकता, दंगे-फसाद हमारे देश को खोखला कर रही है। साहित्यकार का दायित्व निभाते हुए वह विश्व बंधुत्व का संदेश देती है। नारी विमर्श को लेकर वह नए आयामों का उद्‌घाटित कर नारी अस्तित्व, अस्मिता, आत्माभिमान, आत्मनिर्भरता पर ज़ोर देती है। केवल राष्ट्रीय ही नहीं तो वैश्विक समस्याओं में स्त्री की न केवल छाया रही बल्कि उनके लेखन में स्त्री मुख्यतः मुस्लिम नारी एक प्रतिबिंब के रूप में नज़र आती है।